B.A. History Hon's Part-I
Paper: II, Unit-IV, Date: 04.12.2020 Lecture No: 8

Lession: यूरोप में वाणिज्यवाद

वाणिज्यवाद 16वीं से 18वीं शदी में यूरोप में प्रचलित एक आर्थिक सिद्धांत तथा व्यवस्था के अन्तर्गत राज्य की शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से राष्ट्र की अर्थव्यवस्थाओं का सरकारों द्वारा नियंत्रण को प्रोत्साहन मिला।

व्यापारिक क्रांति ने एक नवीन आर्थिक विचारधारा को जन्म दिया इसका प्रारम्भ सोलहवीं सदी में हुआ। इस नवीन आर्थिक विचारधारा को वाणिज्यवाद, वणिकवाद या व्यापारवाद कहा गया है। फ्रांस में इस विचारधारा को कोल्बर्टवाद और जर्मनी में केमरलिज्म कहा गया। 1776 ई० में प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने भी अपने ग्रन्थ 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' में इसका विमोचन किया है।

परिचय: वाणिज्यवाद से अभिप्राय उस आर्थिक विचारधारा से है जो पश्चिमी यूरोप के देशों में विशेषकर फ्रांस, इंग्लैण्ड और जर्मनी में सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में प्रसारित हुई थी और अठारहवीं सदी के मध्य तक इसका खूब विकास हुआ। वाणिज्यवाद की धारणा अन्तराष्ट्रीय व्यापार और उससे प्राप्त धन से संबंधित है। इस वाणिज्यवाद के सिद्धांत के अनुसार कृषि और उसके उत्पादन की कुछ सीमा तक ही वृद्धि कर सकते हैं। औद्योगिकरण से और व्यापार की नियमित वृद्धि से देश सोना-चाँदी प्राप्त कर समृद्ध और शक्तिशाली होगा। "अधिक स्वर्ण प्राप्त कर अधिक शक्तिशाली बनो" यह वाणिज्यवाद का नारा था।

वाणिज्यवाद के प्रमुख लक्षण:

सोने और चाँदी का संचय: व्यापार-वाणिज्य से धन की वृद्धि होगी और यह धन सोने, चाँदी हीरे जवाहरात, बहुमूल्य रत्न के रूप में प्राप्त कर उनका संग्रह करना चाहिये। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार वाणिज्यवाद का आधार है देश में औद्योगीकरण कर देश के बढ़ते हुए उत्पादन की वस्तुओं का अन्य देशों को निर्यात करना। अनुकूल एवं संतुलित व्यापार में प्रभूत धन प्राप्त करने के लिए विदेशों को अत्यधिक मात्रा में व्यापार माल बेचे पर विदेशों से अपने देश में न्यूनतम मात्रा में माल मंगाये। इसका अर्थ यह था कि देश न्यूनतम आयात करे और अधिकतम निर्यात करे। इस सिद्धांत को संतुलित व्यापार कहते हैं। औद्योगिक प्रतिबन्ध और व्यापार नियंत्रण देश में उद्योग व्यवसायों को राजकीय प्रोत्साहन देकर अत्यधिक वृद्धि करने से उत्पादन नहीं घाटा। इसे औद्योगिक प्रतिबंध और व्यापारिक नियंत्रण कहते हैं। नवीन व्यापारिक मंडियों एवं उपनिवेश देश से बाहर भेजी जाने वाली तैयार वस्तुओं की खपत के लिए विदेशों में व्यापारिक मंडियों को प्राप्त करना और वहाँ से देश के उद्योग-व्यवसायों के लिए कच्चा माल प्राप्त करना।

वाणिज्यवाद के उदय और विकास के कारण:

समुद्री यात्राएँ और भौगोलिक खोजें: कोलम्बस, वास्कोडिगामा, अमेरिगो, मेगलन, जान केबाट जैसे साहसी नाविकों ने समुद्री यात्राएँ करके अनेक नये देशों की खोज की। धीरे-धीरे नई बस्तियाँ बसायी गयीं। यूरोप के पश्चिमी देशों ने विशेषकर स्पेन, पुर्तगाल, हालैण्ड, फ्रांस और इंग्लैण्ड ने नये खोजे हुए देशों में अपने-अपने उपनिवेश और व्यापारिक नगर स्थापित किए। चमड़ा, लोहा, रूई, ऊन आदि कच्चा माल प्राप्त कर अपने देश में नवीन वस्तुएँ निर्मित कर उपनिवेशों के रूप में निर्यात रूप भेजी जाती थी। पुनर्जागरण का

प्रभाव यूरोप में नवीन वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ-साथ मानवजीवन के प्रति अधिक उत्सुकता और आकांक्षाएँ उत्पन्न की। प्रभूत धन की माँग बढ़ी और बढ़ता हुआ धन वाणिज्य-व्यापार और उद्योग-धंधों से ही प्राप्त हो सकता था। मुद्रा प्रचलन और बैंकिंग प्रणाली विभिन्न व्यवसायों, उद्योग-धन्धों और वाणिज्य-व्यापार बढ़ जाने से व्यवसाय और व्यापार प्रणाली में संशोधन, सुधार और परिवर्तन हुए। नवोदित राष्ट्र राज्यों द्वारा पोषण और संरक्षण यूरोप में पंद्रहवीं और सोलहवीं सदी में राष्ट्रीय राज्यों का उदय और विकास हुआ। फलतः उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ व्यापार और देश की आर्थिक समृद्धि राष्ट्रीय राज्य की शक्ति बन गयी। इन परिस्थितियों में वाणिज्यवाद और पूँजीवाद खूब फले-फूले।

वाणिज्यवाद का महत्व और परिणाम:

लगभग 250 वर्षों तक वाणिज्यवाद की विचारधारा का बाहुल्य यूरोप में रहा। वाणिज्यवाद की विचारधारा ने यूरोप के राष्ट्रों की आर्थिक नीति को ढाला। यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रारंभ वाणिज्यवाद से होता है। वाणिज्यवाद के कारण नवीन उद्योगों के माल अत्यधिक निर्यात कर विदेशों से बड़े पैमाने पर सोना-चाँदी और धन प्राप्त किया गया। विदेशी माल की खरीद और आयात को निरुत्साहित किया गया। कच्चा माल प्राप्त करने और बने हुए माल की बिक्री और खपत के लिए उपनिवेशों की स्थापना की गई। वाणिज्यवाद की नीतियाँ और सिद्धांत अपनाने से यूरोप में इंग्लैण्ड, फ्रांस और जर्मनी जैसे महान शक्तिशाली राष्ट्रों का निर्माण हो सका।

वाणिज्यवाद के दोष:

पूँजीवाद: वाणिज्यवाद ने उद्योग-धन्धों के प्रसार से पूँजीवाद को जन्म दिया। पूँजीवाद से यूरोपीय समाज में दो वर्गों का उदय हुआ-प्रथम पूँजीपतियों और उद्योगपतियों का वर्ग स्थापित कर लिया। संकीर्ण राष्ट्रीयता वाणिज्यवाद ने एक राष्ट्र को महत्व देकर उसकी समृद्धि के लिए दूसरे अन्य राष्ट्रों के शोषण का मार्ग प्रशस्त किया। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक और औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा वाणिज्यवाद ने विभिन्न देशों में मधुर मैत्रीपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के स्थान को जन्म दिया। सोने-चाँदी का संचय: अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक और औपनिवेशिक संचय की निरर्थकता वाणिज्यवाद ने सोना-चाँदी प्राप्त कर उसके संचयन को अधिक महत्व दिया। उद्योग-धन्धों के विकास होने पर सोने-चाँदी का मूल्य कृषि की उपेक्षा वाणिज्यवाद के समर्थकों ने उद्योग-धन्धों और व्यवसायों को अधिकतम विकास पर बल दिया। इससे कृषि का क्षेत्र अविकसित और पिछड़ा रहा। लोक कल्याण का अभाव वाणिज्यवाद ने राजनीतिक क्षेत्र में राज्य और शासक का आर्थिक क्षेत्र में पिछड़े वर्ग के हित में लोक कल्याण में अभिरुचि नहीं थी। राज्यसत्ता और राज्यभक्ति में वृद्धि वाणिज्यवाद के समर्थकों व्यापारियों और उद्योगपतियों ने शक्तिशाली राज्य का समर्थन किया। इन्हीं कारणों से वाणिज्यवाद का ह्रास हो गया।

□ डा० शंकर जय किशन चौधरी
अतिथि शिक्षक, इतिहास विभाग
डी० बी० कॉलेज, जयनगर